

जलवायु परिवर्तन का मानव स्वास्थ्य पर प्रभाव : एक समाजशास्त्रीय अध्ययन

आरती¹

¹शोध छात्रा, समाजशास्त्र विभाग महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी

Received: 24 Oct 2024 Accepted & Reviewed: 25 Oct 2024, Published : 31 Dec 2024

Abstract

यह शोध प्रपत्र संपूर्ण मानव समाज के परिदृश्य में जलवायु परिवर्तन के कारण बढ़ते जोखिमों पर प्रकाश डालता है और साथ ही यह जोखिमों को कम करने के लिए उपलब्ध नीतिगत विकल्पों की समीक्षा भी करता है। जलवायु परिवर्तन एक ऐसा परिवर्तन है जो किसी क्षेत्र विशेष की परंपरागत जलवायु में होने वाले परिवर्तन से संबंधित है जिसका प्रभाव न केवल सीमित क्षेत्र तक होता है, बल्कि वह संपूर्ण विश्व को भी प्रभावित करता है। जलवायु परिवर्तन का पर्यावरण के समस्त पहलुओं के साथ-साथ वैश्विक मानव स्वास्थ्य और कल्याण पर व्यापक प्रभाव पड़ रहा है। जलवायु परिवर्तन के भौतिक संकेत जिसमें भूमि और समुद्र के तापमान में वृद्धि, समुद्र के जलस्तर में वृद्धि, ग्लेशियर का पिघलना, विभिन्न प्रकार की गैसों की मात्रा में वृद्धि होना, इसके अलावा सामाजिक आर्थिक विकास, मानव स्वास्थ्य, प्रवास और विस्थापन, खाद्य सुरक्षा, नए-नए आविष्कार इत्यादि ने पर्यावरण को प्रदूषित कर जलवायु परिवर्तन की स्थिति को और गंभीर बनाने का कार्य किया है। जिससे यह पूर्वानुमान लगाया जा सकता है कि आने वाले चार से पांच वर्षों में वैश्विक तापमान अपने पराकाष्ठा पर होगा जिसको नियंत्रित कर पाना बेहद मुश्किल होगा। यदि हम मौसम से जुड़ी विभिन्न घटनाओं का विश्लेषण करते हैं तो यह तथ्य उद्भूत होता है कि पिछले दो दशकों की तुलना में अत्यधिक गंभीर समस्याएं सामने आई हैं और तापमान के स्तरों में वृद्धि हुई है तथा वर्षा का औसत मान भी काफी परिवर्तनशील हो गया है। अप्रत्याशित प्रभाव का सटीक अनुमान लगाने और प्रभावी हस्तक्षेपों की जानकारी प्राप्त करने के लिए जलवायु परिवर्तन का मानव स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन करने की विशेष आवश्यकता है। जलवायु परिवर्तन एक ऐसी प्रक्रिया है जो सभी तरह के जनसंख्या, शिक्षा, स्वास्थ्य, सामाजिक-आर्थिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक पहलुओं को छूता है जिससे मानव स्वास्थ्य पर इसके प्रभाव का विचार विमर्श करना नितांत आवश्यक है। प्रस्तुत शोध प्रपत्र में जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को विश्लेषित करने का प्रयास किया गया है।

मुख्य शब्द— जलवायु परिवर्तन, मानव स्वास्थ्य पर प्रभाव, ग्रीनहाउस गैसों, सरकारी एवं गैर-सरकारी नीतियां।

Introduction

समकालीन समाज में जलवायु परिवर्तन एक गंभीर समस्या के रूप में उभर कर सामने आया है। जलवायु परिवर्तन एक ऐसी प्रक्रिया है जो लंबे समय से किसी परंपरागत स्थान विशेष या वैश्विक पटल पर मौसम के पैटर्न में होने वाले बदलाव से संबंधित है। ऐसे बदलाव प्राकृतिक व मानव जनित दोनों रूपों में देखे जा सकते हैं। प्राकृतिक बदलाव में सूर्य की गतिविधि में बदलाव ज्वालामुखी विस्फोट, तूफानों का उठना और हिमनद का पिघलना एवं मानवीय गतिविधियों में मानव द्वारा उत्पादित तरह-तरह के खोज एवं आविष्कार जो जलवायु परिवर्तन को प्रभावित कर रहे हैं। 1800 के दशक से मानवीय गतिविधियां ही जलवायु परिवर्तन के लिए मुख्य रूप से जिम्मेदार हो रही हैं जिनमें मुख्य रूप से कोयला, तेल और गैस जैसे जीवाश्म इंधनों

का जलना शामिल है। साथ ही साथ एक आदर्श जनसंख्या का ना होना भी जलवायु परिवर्तन का एक मुख्य कारण है। अति जनसंख्या होने से देश में निर्धनता, भुखमरी, महामारी इत्यादि जैसी विपदाओं का जन्म होता है जो वैश्विक मानव के लिए बेहद चुनौतीपूर्ण होता है जिससे निपटने के लिए नए-नए आविष्कार एवं प्रौद्योगिकियों का विकास किया जाता है। परिणामस्वरूप मानव द्वारा पर्यावरण का दोहन करने से धीरे-धीरे जलवायु परिवर्तन अपने पराकाष्ठा पर हो जाता है जो मानव स्वास्थ्य को प्रतिकूल रूप से प्रभावित करता है साथ ही साथ यह भौतिक पर्यावरण के सभी पहलुओं को भी प्रभावित करता है, जिसमें सामाजिक, आर्थिक स्थितियों और स्वास्थ्य प्रणालियों के कामकाज शामिल है। इसलिए यह एक खतरा बढ़ाने वाला अवयव है जो आने वाली पीढ़ियों के स्वास्थ्य प्रगति को कमजोर कर सकता है और संभवतः उसे उखाड़ फेंक भी सकता है। जैसे-जैसे जलवायु स्थितियां बदलती हैं मौसम और जलवायु संबंधी घटनाएं अनियमित रूप से बढ़ती जाती हैं जिसमें तूफान असंयमित गर्मी, बाढ़, सूखा, वनाग्नि, श्वेतिमा का द्रवीभूत होना, ग्रीनहाउस गैसों का बढ़ना, विभिन्न प्रकार की बीमारियों का उत्पन्न होना इत्यादि शामिल है। यह मौसम और जलवायु से संबंधित खतरे मानव स्वास्थ्य को प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करते हैं जिससे मृत्यु, गैर संचारी रोग, संक्रामक रोगों का उभरना तथा फैलना एवं स्वास्थ्य आपात स्थितियों का जोखिम बढ़ जाता है। जलवायु परिवर्तन का प्रभाव हमारे स्वास्थ्य, कार्यबल और बुनियादी ढांचे पर भी पड़ रहा है जिससे विश्व व्यापी स्वास्थ्य कवरेज प्रदान करने की क्षमता कम होती जा रही है।

बदलते हुए समय के साथ मानव स्वास्थ्य के सभी पहलू जलवायु परिवर्तन से प्रभावित होते हैं जिसमें स्वच्छ हवा, स्वच्छ जल और मिट्टी से लेकर खाद्य प्रणालियों एवं आजीविका तक इत्यादि आते हैं। ऐसे में इनमें असंतुलन उत्पन्न होने से संपूर्ण पर्यावरण पर नकारात्मक प्रभाव पड़ेगा। जलवायु परिवर्तन मानव स्वास्थ्य को कई तरह से प्रभावित कर रहा है जिसमें लगातार बढ़ती मौसम संबंधी घटनाएं जैसे-हीटवेव, तूफान, बाढ़, खाद्य प्रणालियों में व्यवधान, बैक्टीरिया जनित बीमारियों में वृद्धि मानसिक स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं सम्मिलित हैं। जलवायु परिवर्तन से स्वास्थ्य संबंधित जोखिमों को सबसे ज्यादा कमजोर और वंचित वर्ग के लोगों द्वारा असमान रूप से महसूस किया जा रहा है। जिसमें महिलाएं, बच्चे, बुजुर्ग व्यक्ति, गरीब समुदाय विस्थापित व्यक्ति और अंतरनिहित स्वास्थ्य स्थितियां शामिल हैं। विद्वानों द्वारा यह पता लगाया गया है कि मानवीय गतिविधियां ही जलवायु परिवर्तन का मुख्य कारण रही हैं जिनमें कि कोयला, जीवाश्म इंधनों का जलना इत्यादि। इन सबके दोहन से ग्रीनहाउस गैसों का उत्सर्जन होता है जो पृथ्वी के चारों ओर एक चादर के जैसे कार्य करती है और सूर्य की गर्मी को रोककर तापमान के स्तर को बढ़ा देती है और मानव स्वास्थ्य को बेहद छति पहुँचाती है। ग्रीनहाउस गैसों में कार्बन डाइऑक्साइड, मीथेन, नाइट्रस ऑक्साइड, क्लोरोफ्लोरोकार्बन इत्यादि सम्मिलित हैं जिससे ओजोन परत में छिद्र होने की संभावना काफी ज्यादा बढ़ रही है।

जलवायु वैज्ञानिकों ने यह बताया है कि पिछले 200 वर्षों से वैश्विक तापमान में हो रही निरंतर वृद्धि के लिए केवल मनुष्य ही जिम्मेदार है। ऐसे में वैज्ञानिक सहमति है कि अनियंत्रित कार्बन उत्सर्जन से 2100 तक कम से कम कई डिग्री सेल्सियस तक की वैश्विक गर्मी में बढ़ोतरी होगी जिसके परिणामस्वरूप मानव समाज और प्राकृतिक पारिस्थितिक तंत्र पर स्थानीय, क्षेत्रीय और वैश्विक जोखिमों का उच्च प्रभाव पड़ेगा। वैश्विक जलवायु के तहत पहले से ही पृथ्वी के हर क्षेत्र के साथ-साथ मानव स्वास्थ्य पर व्यापक प्रभाव पड़ा है।

मार्गेट मीड के अनुसार, “यदि हमने पर्यावरण को नष्ट किया तो हमारा समाज नष्ट हो जाएगा।”

मॉरिस के शब्दों में “हम प्रकृति का जितना दोहन करेंगे उतने ही हमारे विकल्प कम होते जाएंगे और हमारे पास मात्र जीवन के लिए संघर्ष के अतिरिक्त कुछ शेष न रह जाएगा।”

इस प्रकार आधुनिकता के दौड़ में संपूर्ण विश्व में जिन समस्याओं ने जन्म लिया है उन समस्याओं में से सर्वाधिक ज्वलंत, विभत्स एवं जटिल समस्या प्रदूषण व पर्यावरण प्रदूषण की है जो जलवायु परिवर्तन के लिए मुख्य रूप से जिम्मेदार होती है जिससे हमारे आसपास का वातावरण दिनों दिन अति विषक्त होता जा रहा है जो आने वाली पीढ़ियों के लिए अति हानिकारक होगा।

उद्देश्य :

- 1— जलवायु परिवर्तन का मानव स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।
- 2— जलवायु परिवर्तन के कारणों का पता लगाना।

उपकल्पना :

- 1— जलवायु परिवर्तन का मानव स्वास्थ्य पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

संबंधित साहित्य समीक्षा : — प्रस्तुत शोध विषय में जलवायु परिवर्तन का मानव स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन करने के लिए द्वितीयक स्रोतों का प्रयोग किया गया है जिसमें हमने विविध प्रकार के आलेखों, शोध प्रबंध, शोध प्रत्यावेदनों के समस्त विवरण का अध्ययन एवं अवलोकन किया है जो इस प्रकार है—

1— वर्मा, अरविंद कुमार (2019), 'जलवायु परिवर्तन और समाज' में उन्होंने यह स्पष्ट किया कि “जलवायु परिवर्तन आज संपूर्ण विश्व के लिए एक चर्चा का विषय बन गया है। यह एक सामान्य प्रक्रिया है किंतु यह चिंता का विषय तब बन जाता है जब यह मनुष्य व अन्य जीव-धारियों के लिए अवांछित, नकारात्मक एवं असामयिक होते हुए गंभीर समस्याएं उत्पन्न कर देता है जिसमें डेंगू और मलेरिया जैसी बीमारियों को नियंत्रित करना बेहद मुश्किल हो जाता है।”

2— अभिलाष, चंद्र शेखर डागर व अन्य ने 'भारत पर जलवायु परिवर्तन के प्रभाव' के अध्ययन में पाया कि “जलवायु परिवर्तन तेजी से मानवीय गतिविधियों के द्वारा पहले से दबाव का सामना कर रहे पारिस्थितिक और समाजिक-आर्थिक प्रणालियों पर अतिरिक्त तनाव का प्रतिनिधित्व करेगा जिससे मानव स्वास्थ्य पर नकारात्मक प्रभाव होने की प्रबल संभावना बढ़ेगी जैसे कुपोषण और संबंधित स्वास्थ्य विकार जिससे बच्चों का अविकसित होना या नाटे कद का रह जाना इत्यादि।

3— प्रसाद, आशीष (2020) 'जलवायु परिवर्तन का मानव स्वास्थ्य पर प्रभाव एवं वर्तमान प्रदूषण रहित चुनौतियां' के गहन अध्ययन में उन्होंने पाया कि “जलवायु परिवर्तन से मिट्टी पर पड़ने वाले प्रभाव का सीधा असर मानव स्वास्थ्य पर पड़ रहा है, जिसके कारण तापमान में वृद्धि और वाष्पीकरण का संतुलन खराब हो जाता है व हमारी मिट्टी की आर्द्र क्षमता कम होकर धीरे-धीरे मरुस्थल में तब्दील हो जाती है। एक समय के बाद मिट्टी ऊसर व बंजर हो जाती है ऐसे में हमारे पास भोज्य पदार्थ के उत्पादन के लिए पर्याप्त उर्वर भूमि नहीं बचेगी और हमें भूख व कुपोषण की चपेट में आकर अपने प्राणों की आहुति देनी पड़ेगी यह

समस्या वर्तमान में कई वैश्विक मुद्दों से जुड़ी हुई है जैसे—गरीबी, आर्थिक विकास, जनसंख्या, संपोष्य विकास एवं प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण इत्यादि।

जलवायु परिवर्तन के कारण— परिवर्तन प्रकृति का शाश्वत नियम है। कोई भी वस्तु कभी भी अपनी जड़ अवस्था में नहीं रह सकती है, इसलिए जलवायु में भी समय—समय पर परिवर्तन होना निश्चित ही तर्कसंगत प्रतीत होता है, किंतु इस परिवर्तन को प्रभावित करने के लिए मुख्य कारण जिम्मेदार है जो हमें इसके बारे में गहन मंथन करने को मजबूर करते हैं।

जलवायु से यहां हमारा अभिप्राय किसी स्थान विशेष के मौसम से है जो वर्तमान समय में पिछले कई दशकों से धीरे—धीरे परिवर्तित होते हुए आज एक वैश्विक जलवायु मुद्दा बन गया है, जिसके लिए कई कारक महत्वपूर्ण हैं जिसमें एक ही राष्ट्र या राज्य में कहीं सूखा पड़ता रहता है तो कहीं दूसरे स्थान पर बाढ़ का एक भयंकर प्रकोप दिखाई पड़ता है। सर्दी, गर्मी या वर्षा का समय से पूर्व आगमन जिसमें गर्मी का अत्यधिक बढ़ जाना, वर्षा ऋतु में परिवर्तन आना तथा शीत ऋतु का समय चक्र कम होना, हिमनद का द्रवित होना जो लगभग हर साल देखने को मिल रहा है। ऐसे में यद्यपि वैश्विक पटल पर देखा जाए तो मानवीय गतिविधियां भी जलवायु परिवर्तन के लिए कम जिम्मेदार नहीं हैं।

जनसंख्या विस्फोट का बढ़ना, औद्योगीकरण एवं नगरीकरण, प्रकृति का अंधाधुंध शोषण, रासायनिक तत्वों का वायुमंडल में प्रवेश, रेडियोधर्मी पदार्थ, कीटनाशक दवाएं, वाहित मल, स्वतः चल निर्वातक और वायुमंडलीय स्तर पर ग्रीनहाउस गैसों जिसमें कार्बन डाइऑक्साइड, नाइट्रस ऑक्साइड, मीथेन, क्लोरोफ्लोरोकार्बन, जलवाष्प, अधिक मात्रा में खाद्यान्नों से जीवाश्म इंधनों को निकालना, अनावश्यक मोटर वाहनों का प्रयोग करना, बड़े—बड़े बांधों का निर्माण करना, कृषि में जैविक उर्वकों के बजाय रासायनिक उर्वरकों का प्रयोग करना, पृथ्वी से लेकर ग्रह एवं उपग्रह तक नई—नई खोज तथा आविष्कार करना, विलासिता पूर्ण जीवन जीने के लिए अधिक भौतिक संसाधनों का उपभोग करना, वैश्विक संस्कृति को अपनाना, वनों का अंधाधुंध कटाई करना इत्यादि जलवायु परिवर्तन के लिए मुख्य रूप से जिम्मेदार हैं। जिसका नकारात्मक प्रभाव मनुष्य एवं समस्त जीवधारियों पर पड़ रहा है जो एक क्षेत्रीय या स्थानीय समस्या ही नहीं बल्कि संपूर्ण वैश्विक पटल पर एक चुनौतीपूर्ण गंभीर समस्या है। इसी दर से यदि जलवायु परिवर्तन की यह प्रक्रिया निरंतर चलती रही तो सन् 2100 तक संपूर्ण विश्व के कुछ हिस्से बढ़ते हुए समुद्र तल में डूब जाएंगे और कुछ हिस्से सुखे से ग्रसित होकर भूखे तड़प—तड़प कर मर जाएंगे। कई स्थानों के जीव जंतु वनाग्नि से प्रभावित होकर विलुप्त हो जाएंगे और अर्जेंटीना एवं दक्षिण अफ्रीका जैसे देशों के लोग डेंगू और मलेरिया जैसे खतरनाक बीमारियों की चपेट में आकर अपने प्राणों की आहुति दे देंगे। समताप मंडल में ओजोन छिद्र के बढ़ने से सूर्य की पराबैंगनी किरणों को पृथ्वी पर सीधा आने से नियंत्रित कर पाना बेहद मुश्किल होगा।

मानव स्वास्थ्य पर प्रभाव : जलवायु परिवर्तन के प्रभाव को अगर देखा जाए तो वायुमंडल में विभिन्न प्रकार की ग्रीनहाउस गैसों की मात्रा में तीव्र वृद्धि होने से तापमान की जो चरम सीमा है वह मानव शरीर के आंतरिक तापमान को नियंत्रित करने की क्षमता को सबसे अधिक प्रभावित कर रही है, जिसके परिणामस्वरूप विभिन्न बीमारियां उत्पन्न हो सकती हैं। तापमान में तीव्रतम वृद्धि होने से हृदय रोग, श्वसन रोग, मस्तिष्क वाहिकीय रोग और मधुमेह से संबंधित कई सारी बीमारियां हो सकती हैं साथ ही साथ जलवायु परिवर्तन

अत्यधिक ठंड से संबंधित बीमारियों में भी योगदान दे सकती है। हृदय संबंधी बीमारियां, ब्रेनहेमरेज व हाइपोथर्मिया जैसी बीमारियों का कारण बन सकती है।

जलवायु परिवर्तन सामाजिक तनाव, सामाजिक अस्थिरता और विखंडन जैसी समस्या को बढ़ाकर मानव स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकती है। जब सामाजिक तनाव, पर्यावरणीय तनाव जैसे कि बढ़े हुए तापमान, चरम मौसमी घटनाएं, हवा और पानी की खराब गुणवत्ता, कम होती खाद्य सुरक्षा इत्यादि एकत्रित होकर प्रतिकूल मानसिक स्वास्थ्य और परिणाम कल्याण को जन्म देती हैं जो चिंता, अवसाद और आत्महत्या सहित मानसिक स्वास्थ्य विकारों का रूप ले सकते हैं। जलवायु संबंधी घटनाओं का व्यक्तियों पर महत्वपूर्ण मनोवैज्ञानिक प्रभाव हो सकता है जिससे अभिघातजन्य तनाव, नींद की कठिनाइयां, सामाजिक परिहार, चिड़चिड़ापन और नशीली दवाओं या शराब का दुरुपयोग बढ़ सकता है। तीव्र मौसमी घटनाओं में जैसे विनाशकारी तूफान या बाढ़ की वजह से अनगिनत लोगों का मरना, विस्थापन संबंधित समस्या का सामना करना, आत्महत्या के लिए मजबूर होना इत्यादि शामिल है। हालांकि हर कोई चरम मौसम की घटनाओं से जुड़े स्वास्थ्य के प्रति संवेदनशील है लेकिन कुछ आबादी में ऐसे लोग हैं जो अन्यो की तुलना में ज्यादा संवेदनशील है। बच्चे, गर्भवती महिलाएं, वयोवृद्ध, बाहर काम करने वाले लोग और पहले से ही स्वास्थ्य से पीड़ित लोग जलवायु परिवर्तन से ज्यादा प्रभावित हो रहे हैं।

वैश्विक पटल पर अगर देखा जाए तो जलवायु परिवर्तन एक ऐसी समस्या है जो संपूर्ण विश्व को अपनी चपेट में लाकर उसे नकारात्मक रूप से प्रभावित कर रही है। ऐसे में चाहे विकसित देश हो या विकासशील दोनों ही जलवायु परिवर्तन से कहीं न कहीं प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित हो रहे हैं। किंतु विकासशील देश में रहने वाले लोग जो पहले से ही स्वास्थ्य संबंधी जोखिमों का सामना कर रहे थे, उनके लिए जलवायु परिवर्तन संबंधी समस्याएं बेहद चुनौतीपूर्ण हैं विकसित देशों में अगर देखा जाए तो संयुक्त राज्य अमेरिका जैसे धनी देश में भी जलवायु परिवर्तन मानव स्वास्थ्य के लिए खतरा पैदा कर रहे हैं, वहां की कुछ आबादी जैसे कि बच्चे, गर्भवती महिलाएं, वृद्ध वयस्क और कम आय वाले लोग भी जलवायु परिवर्तन के बढ़ते हुए जोखिमों का सामना कर रहे हैं।

विश्व स्वास्थ्य संगठन का अनुमान है कि जलवायु परिवर्तन के कारण 2030 से 2050 के बीच में कुपोषण, मलेरिया, दस्त और हृदय संबंधित तनाव से हर साल अतिरिक्त 250000 मौतें होंगी। इसके अतिरिक्त स्वास्थ्य क्षेत्र की प्रत्यक्ष लागत प्रतिवर्ष 4 बिलियन तक पहुंच सकती है। दुर्भाग्यपूर्ण वास्तविकता यह है कि निम्न और मध्यम आय वाले देश वैश्विक ग्रीनहाउस उत्सर्जन में अपने न्यूनतम योगदान के बावजूद बढ़ती जलवायु परिवर्तनशीलता से प्रतिकूल स्वास्थ्य प्रभाव का एक बड़े हिस्से में अनुभव करते हैं। **लॉस एंजिल्स** में धुंध के कारण दृश्यता कम हो जाती है जो मानव स्वास्थ्य के लिए हानिकारक होता है जिससे अस्थमा या अन्य फेफड़ों की बीमारियां बढ़ सकती हैं, जिसमें बच्चे, बड़े वयस्क और बाहर काम करने वाले लोग पीड़ित हो सकते हैं। **तूफान कैटरीना संयुक्त राज्य अमेरिका** में सबसे विनाशकारी तूफानों में से एक था जिसके कारण अनुमानतः 971 से 1300 लोगों की मृत्यु हो गई थी और अनगिनत लोग घायल हो गए थे।

हाल ही में अगर देखा जाए तो वैज्ञानिक प्रयोगशालाएं भी जलवायु परिवर्तन को प्रभावित कर संपूर्ण विश्व को जोखिम में डाल रही है जिसमें **चीन के वुहान** से उत्पन्न कोरोना वायरस जिसने संपूर्ण विश्व को हिला कर रख दिया है जिसमें वैज्ञानिकों द्वारा संयुक्त अनुसंधान कार्य कर यह बताया गया कि **साल 2019 में**

कोरोना वायरस सबसे पहले चीन के वुहान में सामने आया था। इसके बाद यह वैश्विक पटल पर फैलना शुरू हुआ। जिससे आज तक पुरी दुनियां परेशान है। जिसकी वजह से सम्पूर्ण विश्व में 27 लाख से अधिक लोग जान गवां चुके हैं और कई देशों की आर्थिक स्थिति एकदम चरमरा गई है।

इस प्रकार अगर देखा जाए तो जलवायु परिवर्तन का भारत में स्वास्थ्य पर बहुत गंभीर असर पड़ने की संभावना है जैसे कुपोषण और उससे जुड़ी स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं जिसमें बच्चों में बौनापन जिसका प्रभाव सबसे ज्यादा गरीबों पर पड़ेगा। मलेरिया और विक्टर जनित रोग, दस्त और बाल मृत्यु दर यह उन सब क्षेत्र में फैलने की अधिक संभावना है जहां पर पहले ही ठंडे तापमान के कारण संक्रमण सीमित था। दक्षिण एशिया आपदाओं से प्रभावित लोगों के लिए प्रवास का केंद्र माना जाता है जहां पर जल बंटवारे को लेकर पहले से ही विवाद चल रहा है। ऐसे में अगर प्रवासन की दरों में वृद्धि हुई तो वहां की बढ़ती आबादी को जल संबंधी समस्याओं का सामना करना होगा जो मानव स्वास्थ्य के लिए हानिकारक सिद्ध हो सकता है।

जलवायु परिवर्तन को नियंत्रित करने के उपाय : जलवायु परिवर्तन पहले से ही लाखों लोगो के लिए एक गंभीर खतरा है जो लोगों को कई तरह से नकारात्मक रूप से प्रभावित कर रहा है। लेकिन इसके कुछ समाधान भी हैं जिससे इसे नियंत्रित किया जा सकता है जिसमें ऊर्जा प्राप्त करने के तरीके से लेकर वनों की कटाई को सीमित कर जलवायु परिवर्तन को नियंत्रित किया जा सकता है। जलवायु परिवर्तन में निरंतर वृद्धि होती जा रही है जो हमारे ग्रह पर संपूर्ण जीव के लिए एक वैश्विक खतरा है जिन्हें संपूर्ण विश्व को एक मंच पर आकर इसके बहुत से समाधान और इन्हें अच्छी तरह से समझना नितांत आवश्यक है।

वर्ष 2015 में वैश्विक नेताओं ने जलवायु परिवर्तन को मद्देनजर रखते हुए इनके समाधानों को व्यवहार में लाने के लिए **पेरिस समझौते** नामक एक प्रमुख संधि पर हस्ताक्षर किए। जलवायु परिवर्तन के संपूर्ण समाधानों में मुख्य समाधान ग्रीनहाउस उत्सर्जन को कम करना और इसे यथाशीघ्र शून्य तक पहुंचाया जाना चाहिए क्योंकि वन और महासागर दोनों ही जलवायु को नियंत्रित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं जो कार्बन डाइआक्साइड को अवशोषित करने की प्राकृतिक क्षमता को बढ़ाते हैं जिससे ग्लोबल वार्मिंग को रोकने में काफी मदद मिल सकती है। जलवायु परिवर्तन को नियंत्रित करने में सरकार को भी सतत् प्रयास करते रहना चाहिए जिसमें भविष्य को ध्यान में रखते हुए कम से कम जीवाश्म इंधनों का प्रयोग करना चाहिए। इसके स्थान पर नवीकरणीय ऊर्जा का प्रयोग करना चाहिए, दीवारों और छतों को इंसुलेट करके और तेल या गैस बॉयलर से हीट पंप पर स्विच करके घरों को आरामदायक बनाया जा सकता है। प्लास्टिक का प्रयोग कम से कम किया जाना चाहिए, लोगों द्वारा उपभोग की जाने वाली वस्तुओं को आवश्यकतानुसार प्रयोग करना चाहिए, महासागरों की रक्षा करना चाहिए जिससे जलवायु परिवर्तन को नियंत्रित करने में मदद मिल सकती है। टिकाऊ परिवहन अपनाना चाहिए, रासायनिक खेती के स्थान पर जैविक खेती करना चाहिए, वृक्षों का अधिक से अधिक रोपण करना चाहिए और अपने सामाजिक संबंधों को मजबूत कर अपने दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति करना चाहिए जिससे जलवायु परिवर्तन को नियंत्रित किया जा सकता है।

निष्कर्ष एवं सुझाव : उपर्युक्त विवरण में जलवायु परिवर्तन का मानव स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रभाव के विभिन्न स्वरूपों पर प्रकाश डालने से यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ है कि जलवायु परिवर्तन न केवल प्रकृति या पर्यावरण पर नकारात्मक प्रभाव डालकर पर्यावरणीय असंतुलन कर देती है बल्कि मानव, पशु तथा वनस्पति

जीवन पर भी कुप्रभाव डालकर प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से उनके स्वास्थ्य एवं संसाधनों, जो जीवन का अस्तित्व एवं निरंतरता बनाए रखने के लिए आवश्यक है, को हानि पहुंचाती है।

अतः ऐसे में इसके रोकथाम के लिए पृथक-पृथक सुझाव प्रस्तुत किए जा सकते हैं जिसमें यदि हम गहराई से विचार मंथन करें तो पता चलता है कि जलवायु परिवर्तन एक समग्र समस्या है। अतः इसके रोकथाम के लिए समस्त सुझावों को हमें वैश्विक रूप से लागू करना चाहिए जिसमें प्रथम रूप से जनसंख्या को नियंत्रित करना, पर्यावरणीय संरक्षण के लिए जागरूकता अभियान चलाना, अधिकाधिक वृक्षारोपण करना, भविष्य को ध्यान में रखते हुए भौतिक संसाधनों का उपभोग करना, वैज्ञानिक गतिविधियों को नियंत्रित कर पर्यावरणीय संतुलन को बनाए रखना एवं वैश्विक सहभागिता को बढ़ाना इत्यादि द्वारा जलवायु परिवर्तन को नियंत्रित किया जा सकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची—

1. जलवायु परिवर्तन का मानव स्वास्थ्य पर प्रभाव,
National institute of Environmental Health Sciences (gov.)
<https://www.nieh.nih.gov>
2. City of Chicago (gov.)
<https://climatechange.chicago.gov>
3. U.S. Global change. Research Program (gov.)
<https://health.2016.globalchange.gov>
4. Wikipedia जलवायु परिवर्तन का मानव स्वास्थ्य पर प्रभाव
<https://en.wikipedia.org>
5. Ohlone collage
<https://7.252.14.250>JSPUI>bitstream> (PDF)
6. Balasubramanim, Muniyandi (2012) 'Climate change and its impact on India'
<https://www.researchgate.net/publication>
7. अभिलाष, चन्द्रशेखर डागर व अन्य 'भारत पर जलवायु परिवर्तन के प्रभाव'
<https://www.researchgate.net//publication>
8. प्रसाद आशीष (2020) 'जलवायु परिवर्तन का मानव स्वास्थ्य पर प्रभाव एवं वर्तमान प्रदूषण रहित चुनौतियां'
<https://hindi.indiawaterportal.org>
9. वर्मा, अरविन्द कुमार (2019) 'जलवायु परिवर्तन और समाज'
<https://ingited.in>artical>view>
10. Amar Ujala
<https://www.amarujala.com>
11. World bank
<https://www.worldbank.org>